एएमसी रेपो क्लियरिंग लिमिटेड (एआरसीएल) और कॉर्पोरेट ऋण बाज़ार विकास निधि (सीडीएमडीएफ)

संदर्भ: श्रीमती निर्मला सीतारमण ने आज मुंबई में सीडीएमडीएफ का उद्घाटन किया और एआरसीएल पर मुहूर्त ट्रेडिंग की शुरुआत की।

कॉर्पोरेट ऋण बाज़ार विकास निधि (सीडीएमडीएफ)

- कॉर्पोरेट ऋण बाजार विकास निधि (सीडीएमडीएफ) की स्थापना भारत के कॉर्पोरेट ऋण बाजार को विकसित करने के लिए केंद्रीय बजट 2021-22 के हिस्से के रूप में की गई थी।
- सीडीएमडीएफ का प्रबंधन कॉरपोरेट ऋण के लिए गारंटी निधि (जीएफसीडी) द्वारा किया जाता है, जो 310 करोड़ रुपये के कोष वाला एक ट्रस्ट फंड है।
- नेशनल क्रेडिट गारंटी ट्रस्टी कंपनी लिमिटेड (एनसीजीटीसी), वित्तीय सेवा विभाग (डीएफएस) की पूर्ण स्वामित्व वाली कंपनी, जीएफसीडी का प्रबंधन करती है।
- सीडीएमडीएफ का उद्देश्य बाजार अव्यवस्था के दौरान निधि द्वारा लिए गए ऋण के प्रति गारंटी कवर प्रदान करना है।
- गारंटी 15 वर्षों के लिए स्थायी सुविधा के रूप में उपलब्ध होगी और बाजार में व्यवधान के दौरान सेबी बोर्ड के निर्णय के आधार पर एनसीजीटीसी इसे सक्रिय करेगा।
- सीडीएमडीएफ सेबी (एआईएफ) विनियमों के तहत एक ट्रस्ट के रूप में एक वैकल्पिक निवेश कोष (एआईएफ) है।
- यह बांड बाजार को बढ़ाने के लिए तनावग्रस्त और सामान्य समय के दौरान निवेश ग्रेड ऋण प्रतिभूतियों की खरीद करेगा।
- म्यूचुअल फंड (एमएफ) और निर्दिष्ट ऋण-उन्मुख एमएफ योजनाओं की परिसंपत्ति प्रबंधन कंपनियां (एएमसी) नैतिक खतरे की चिंताओं को संबोधित करते हुए सीडीएमडीएफ इकाइयों की सदस्यता लेंगी।
- सीडीएमडीएफ बाजार अव्यवस्था के दौरान पात्र कॉर्पोरेट ऋण प्रतिभूतियों को खरीदेगा और बाजार में सुधार होने पर उन्हें बेच देगा, जिससे कॉर्पोरेट ऋण बाजार में तरलता की सुविधा होगी।

एएमसी रेपो क्लियरिंग लिमिटेड (एआरसीएल)

- एएमसी रेपो क्लियरिंग कॉर्पोरेशन लिमिटेड, जिसे लिमिटेड पर्पस क्लियरिंग कॉर्पोरेशन (एलपीसीसी) के नाम से जाना जाता है, ने कॉर्पोरेट बॉन्ड बाजारों को सघन करने के लिए परिचालन शुरू किया है।
- एलपीसीसी का मुख्य उद्देश्य कॉर्पोरेट बॉन्ड रेपो लेनदेन के समाशोधन और निपटान की सुविधा प्रदान करना है।
- एलपीसीसी की स्थापना का उद्देश्य एक सक्रिय रेपो बाजार को बढ़ावा देना है, जिससे कॉर्पोरेट बॉन्ड बाजार में तरलता बढ़ेगी।
- यह संस्था एक जीवंत कॉर्पोरेट बॉन्ड रेपो बाजार बनाएगी, जिससे बाजार निर्माताओं को उनकी इन्वेंट्री के लिए लागत प्रभावी फंडिंग तक पहुंचने में मदद मिलेगी।
- एलपीसीसी बॉन्ड धारकों को अपनी संपत्ति बेचे बिना अल्पकालिक तरलता जरूरतों को पूरा करने का एक अवसर प्रदान करेगा।

- यह अल्पकालिक अधिशेष वाली संस्थाओं को अपने धन को सुरक्षित और कुशलता से उपयोग करने का अवसर प्रदान करता है।
- एलपीसीसी की कार्यप्रणाली भारत में कॉर्पोरेट बॉन्ड बाजार के समग्र विकास और सुधार में योगदान देगी।

बिक्री हेतु प्रस्ताव (Offer for Sale- OFS)

सन्दर्भ: संस्थागत निवेशकों ने रेल विकास निगम लिमिटेड (आरवीएनएल) में 5.36% हिस्सेदारी की सरकार के बिक्री हेतु प्रस्ताव (ओएफएस) में गहरी रुचि दिखाई।

- बिक्री हेतु प्रस्ताव (ओएफएस) 2012 में सेबी द्वारा शुरू की गई एक सरलीकृत शेयर बिक्री पद्धति है।
- इसका उद्देश्य प्रमोटरों को न्यूनतम सार्वजनिक शेयरधारिता मानदंडों को पूरा करने में मदद करना था।
- सूचीबद्ध कंपनियों ने अनुपालन के लिए ओएफएस को व्यापक रूप से अपनाया है।
- सरकार ने सार्वजनिक क्षेत्र के उद्यमों में अपनी हिस्सेदारी बेचने के लिए भी ओएफएस का उपयोग किया।
- ओएफएस में, प्रमोटर एक एक्सचेंज प्लेटफॉर्म पर खुदरा निवेशकों, कंपनियों, एफआईआई और क्यूआईबी को शेयर बेचते हैं।

विशेषताएँ

- अनुवर्ती सार्वजनिक पेशकश (follow-on public offering- FPO) के विपरीत, ओएफएस तंत्र का उपयोग विशेष रूप से मौजूदा शेयरों को बेचने के लिए किया जाता है, नए शेयर जारी करने के लिए नहीं।
- किसी कंपनी में 10% से अधिक शेयर पूंजी रखने वाले केवल प्रमोटर या शेयरधारक ही ओएफएस पद्धति का उपयोग कर सकते हैं।
- ओएफएस सुविधा बाजार पूंजीकरण के आधार पर शीर्ष 200 कंपनियों के लिए उपलब्ध है।
- ओएफएस के दौरान, प्रस्तावित शेयरों का न्यूनतम 25% म्यूचुअल फंड (एमएफ) और बीमा कंपनियों के लिए आरक्षित होते हैं।
- एमएफ और बीमा कंपनियों के अलावा किसी भी एकल बोलीदाता को पेशकश आकार का 25% से अधिक आवंटित नहीं किया जा सकता है।
- ऑफर आकार का न्यूनतम 10% खुदरा निवेशकों के लिए आरक्षित है।
- विक्रेताओं के पास खुदरा निवेशकों को बोली मूल्य या अंतिम आवंटन मूल्य पर छूट देने का विकल्प होता है।
- कंपनियों को आयोजन से कम से कम दो बैंकिंग दिन पहले ओएफएस आयोजित करने के अपने निर्णय के बारे में स्टॉक एक्सचेंजों को सूचित करना होगा।

विदेशी संस्थागत निवेशक (Foreign Institutional Investors-FIIs), जिन्हें विदेशी पोर्टफोलियो निवेशक (एफपीआई) भी कहा जाता है, ऐसी संस्थाएं हैं जो अपने देश के अलावा किसी अन्य देश की वित्तीय परिसंपत्तियों जैसे स्टॉक, बॉन्ड और प्रतिभूतियों में निवेश करती हैं। ये निवेशक आम तौर पर बड़े संस्थान होते हैं, जिनमें म्यूचुअल फंड, पेंशन फंड, हेज फंड, बीमा कंपनियां और सॉवरेन वेल्थ फंड आदि शामिल हैं।

यूरेलाइट

सन्दर्भ: इलाहाबाद विश्वविद्यालय और स्विट्जरलैंड के बर्न विश्वविद्यालय के वैज्ञानिकों की एक टीम ने एक महत्वपूर्ण खोज की, जिसमें पाया गया कि ढाला क्रेटर का निर्माण यूरेलाइट नामक एक अत्यंत दुर्लभ और प्राचीन उल्कापिंड के प्रभाव के कारण हुआ था।

यूरेलाइट के बारे में

- यूरेलाइट्स एक असाधारण दुर्लभ प्रकार के आदिम उल्कापिंड हैं, जो पृथ्वी पर सभी उल्कापिंडों का केवल एक छोटा सा हिस्सा बनाते हैं।
- इनका नाम रूस के नोवो उरेई गांव के नाम पर रखा गया है, जहां पहला नमूना खोजा गया था।
- यूरेलाइट्स सिलिकेट चट्टान से बने होते हैं, मुख्य रूप से ओलिवाइन और पाइरोक्सिन, जिसमें 10% से कम कार्बन (हीरा या ग्रेफाइट), धातु सल्फाइड और कुछ बारीक दाने वाले सिलिकेट होते हैं।
- इन उल्कापिंडों में लम्बी गुहाएँ होती हैं जो आमतौर पर एक ही दिशा में फैली होती हैं।
- कई अन्य पथरीले उल्कापिंडों के विपरीत, यूरेलाइट्स में चोंड्रूयूल्स की कमी होती है, जो छोटे, गोलाकार दाने होते हैं जो प्रारंभिक सौर मंडल में बने होते हैं।
- यूरेलाइट्स को आदिम उल्कापिंड माना जाता है क्योंकि उनकी संरचना उस सामग्री से काफी मिलती-जुलती है जिससे सौर मंडल की उत्पत्ति हुई है।

ढाला क्रेटर

- ढाला क्रेटर को भारत का सबसे पुराना और सबसे बड़ा इम्पैक्ट क्रेटर होने का गौरव प्राप्त है।
- ऐसा माना जाता है कि इसका निर्माण लगभग 2500 मिलियन वर्ष पहले हुआ था।
- गांव ढाला के नाम पर रखा गया यह क्रेटर अपनी मूल संरचना के नष्ट हुए अवशेष के रूप में बना हुआ है।
- मध्य प्रदेश के शिवपुरी जिले में स्थित, यह क्रेटर 11 किमी व्यास में फैला है, जो इसे एशिया में सबसे बड़ा बनाता है।

भारत में अन्य इम्पैक्ट क्रेटर

- **लोनार क्रेटर:**
  - ✓ **स्थान:** लोनार क्रेटर भारत के महाराष्ट्र के बुलढाणा जिले में है।
  - ✓ **विशेषताएँ:** यह अत्यधिक खारे और क्षारीय पानी की झील है जिसमें कोई बहिर्प्रवाह नहीं है, जिससे खनिज सांद्रता अधिक होती है।
  - ✓ **निर्माण:** लगभग 570,000 से 47,000 वर्ष पहले उल्कापिंड के प्रभाव से निर्मित।
  - ✓ **भूवैज्ञानिक विशेषता:** यह ज्वालामुखीय चट्टान में एक होवर-समर्थित उभार है, जो एक एंडोरहिक या बंद बेसिन का निर्माण करता है।
  - ✓ **वन्यजीव अभयारण्य:** अपने विविध वन्य जीवन के कारण एक वन्यजीव अभयारण्य घोषित किया गया है, जिसमें 160 पक्षी प्रजातियाँ, 46 सरीसृप प्रजातियाँ और लुप्तप्राय एशियाई भेड़िये जैसी 12 स्तनपायी प्रजातियाँ शामिल हैं।
- **रामगढ़ क्रेटर**
  - ✓ **आयु:** रामगढ़ क्रेटर लगभग 150 मिलियन वर्ष पहले राजस्थान के बारां जिले में बना था।
  - ✓ **आकार:** यह क्रेटर लगभग तीन किलोमीटर व्यास का है और इसके परिणामस्वरूप एक किलोमीटर लंबी और 250 मीटर चौड़ी झील बन गई है।

- ✓ **खोज:** पहली बार 1869 में भारतीय भूवैज्ञानिक सर्वेक्षण द्वारा पाया गया, यह एक इम्पैक्ट क्रेटर के सभी लक्षण दिखाता है।
- ✓ **अनुसंधान:** GSI और INTACH के भू-वैज्ञानिकों ने COVID महामारी से पहले क्रेटर पर अतिरिक्त शोध किया।
- ✓ **मान्यता:** राजस्थान के खान और भूविज्ञान विभाग ने इसे IUGH को एक अंतरराष्ट्रीय भू-विरासत स्थल के रूप में अनुशंसित करने की योजना बनाई है।

पूर्ण और आंशिक आरक्षित बैंकिंग

संदर्भ: अर्थशास्त्री वर्तमान में आंशिक-आरक्षित बैंकिंग के विपरीत पूर्ण-आरक्षित बैंकिंग (100% आरक्षित बैंकिंग) की खूबियों पर चर्चा कर रहे हैं।

पूर्ण-आरक्षित बैंकिंग (Full-Reserve Banking):

- ➢ **जमा की सुरक्षा:** बैंकों को ग्राहकों से प्राप्त मांग जमा को उधार देने से प्रतिबंधित किया जाता है, जिससे बैंक के भागने का जोखिम कम हो जाता है।
- ➢ **100% आरक्षित आवश्यकता:** बैंकों को केवल संरक्षक के रूप में कार्य करते हुए, इन जमाओं का 100% हमेशा अपनी तिजोरियों में रखना चाहिए।
- ➢ **सीमित उधार:** बैंक केवल सावधि जमा के रूप में प्राप्त धन को उधार दे सकते हैं।
- ➢ **सुरक्षित रखने की भूमिका**: बैंक जमाकर्ताओं के पैसे के सुरक्षित रखवाले के रूप में कार्य करते हैं और इस सेवा के लिए शुल्क लेते हैं।

आंशिक- आरक्षित बैंकिंग (Fractional-Reserve Banking):

- ➢ **ऋण और जोखिम का विस्तार:** आंशिक आरक्षित बैंकिंग प्रणाली बैंकों को उनकी तिजोरी में रखी नकदी से अधिक धन उधार देने की अनुमति देती है।
- ➢ **इलेक्ट्रॉनिक मनी पर निर्भरता:** यह प्रणाली उधार देने के लिए इलेक्ट्रॉनिक मनी पर बहुत अधिक निर्भर करती है।
- ➢ **केंद्रीय बैंक का हस्तक्षेप:** आंशिक आरक्षित बैंकिंग प्रणाली में तत्काल संकट को रोकने के लिए केंद्रीय बैंक आपातकालीन नकदी प्रदान कर सकते हैं।
- ➢ **बैंक भागने का जोखिम:** यदि कई जमाकर्ता एक साथ नकदी की मांग करते हैं तो बैंक भागने का संभावित जोखिम होता है।

भारतीय बैंकिंग प्रणाली में आरक्षित आवश्यकताएँ

- ➢ **नकद आरक्षित अनुपात (Cash Reserve Ratio- CRR):**
  - ✓ कुल जमा का एक हिस्सा आरबीआई के पास नकदी भंडार के रूप में रखा जाएगा।
  - ✓ अर्थव्यवस्था में मुद्रा आपूर्ति को नियंत्रित करने के लिए RBI द्वारा उपयोग किया जाता है।
  - ✓ सीआरआर में वृद्धि से ऋण देने के लिए उपलब्ध धनराशि और धन आपूर्ति कम हो जाती है।
- ➢ **वैधानिक तरलता अनुपात (Statutory Liquidity Ratio- SLR):**
  - ✓ बैंकों को एनडीटीएल का एक निश्चित प्रतिशत तरल संपत्ति (नकद, सोना, या अनुमोदित प्रतिभूतियों) के रूप में रखना आवश्यक होता है।

- ✓ यह तरलता जोखिमों के विरुद्ध एक बफर के रूप में कार्य करता है और यह भी सुनिश्चित करता है कि बैंक अल्पकालिक दायित्वों को पूरा कर सकें।

➢ **तरलता कवरेज अनुपात (Liquidity Coverage Ratio - LCR):**

- ✓ अल्पकालिक तरलता झटकों के प्रति बैंकों का लचीलापन बढ़ाने के लिए इसे पेश किया गया।
- ✓ बैंकों को दबाव के तहत 30 दिनों के लिए शुद्ध नकदी बहिर्प्रवाह को कवर करने के लिए पर्याप्त उच्च गुणवत्ता वाली तरल संपत्ति बनाए रखने की आवश्यकता है।

➢ **निवल स्थिर निधीयन अनुपात (Net Stable Funding Ratio- NSFR):**

- ✓ इसका उद्देश्य बैंकों के लिए अधिक स्थिर और दीर्घकालिक निधीयन प्रोफाइल को बढ़ावा देना है।
- ✓ यह सुनिश्चित करता है कि बैंकों के पास एक वर्ष की अवधि में परिसंपत्तियों और संचालन का समर्थन करने के लिए एक स्थिर निधीयन आधार हो।

NEWS IN BETWEEN THE LINES

मार्केरियन 421

मार्केरियन 421:

- एक महाविशाल ब्लैक होल, जो पृथ्वी की ओर उच्च-ऊर्जा कण उत्सर्जित कर रहा है।
- "ब्लेज़ार" के रूप में वर्गीकृत, एक ब्लैक होल प्रणाली जिसके जेट, पृथ्वी की ओर निर्देशित हैं।
- उरसा मेजर तारामंडल में लगभग 400 मिलियन प्रकाश वर्ष दूर स्थित है।

सुपरमैसिव ब्लैक होल की विशेषताएं:

- हमारे सूर्य से लगभग 50,000 गुना अधिक द्रव्यमान।
- आमतौर पर आकाशगंगाओं के केंद्र में पाया जाता है।
- लगभग सभी आकाशगंगाओं के मूल में एक अतिविशाल ब्लैक होल होता है।

इमेजिंग एक्स-रे पोलारिमेट्री एक्सप्लोरर (IXPE):

- नासा और इटली की अंतरिक्ष एजेंसी के बीच सहयोग।
- सुपरनोवा अवशेष और सुपरमैसिव ब्लैक होल जैसी चरम खगोलीय वस्तुओं के अध्ययन पर ध्यान केंद्रित करता है।
- न्यूट्रॉन सितारों और सुपरमैसिव ब्लैक होल जैसी वस्तुओं से ध्रुवीकृत एक्स-रे को मापने के लिए समर्पित पहला उपग्रह, जो ब्रह्मांड में नई अंतर्दृष्टि प्रदान करता है।

पार्कांचिक ग्लेशियर

पार्कांचिक ग्लेशियर के बारे में:

- पार्कांचिक ग्लेशियर भारत के लद्दाख में है, और सुरू नदी घाटी के सबसे बड़े ग्लेशियरों में से एक है।
- तेजी से बर्फ पिघलने से ग्लेशियर के पास तीन हिमनदी झीलों का निर्माण हो सकता है।
- इससे क्षेत्र में हिमनदी झील के फटने और पानी की कमी का खतरा पैदा हो गया है।
- पार्कांचिक ग्लेशियर का पीछे हटना महत्वपूर्ण रहा है, यह 1971 और 1999 के बीच प्रति वर्ष लगभग 2 मीटर की औसत दर के साथ तथा 1999 से 2021 तक प्रति वर्ष 12 मीटर तक बढ़ गया है।
- 2015 से 2021 तक फील्ड अवलोकन प्रति वर्ष 20.5 मीटर की और भी अधिक दर का संकेत देते हैं।
- अध्ययन में ग्लेशियर की गतिशीलता का आकलन करने के लिए उपग्रह चित्रों और जमीनी रडार का उपयोग किया गया।
- ग्लेशियर के तेजी से पीछे हटने से डाउनस्ट्रीम जल संसाधनों और पारिस्थितिक तंत्र पर इसके प्रभाव के बारे में पर्यावरणीय चिंताएँ बढ़ गई हैं।

मुक्त आवागमन व्यवस्था

मुक्त आवागमन व्यवस्था के बारे में:

- मुक्त आवागमन व्यवस्था (Free Movement Regime- FMR) ने बिना वीजा या औपचारिक अनुमति के भारत-म्यांमार सीमा पर आवाजाही की सुविधा प्रदान की है।
- इसका उद्देश्य दोनों देशों के बीच लोगों से लोगों के बीच संपर्क, व्यापार और सांस्कृतिक आदान-प्रदान को बढ़ावा देना है।

पृष्ठभूमि:

- एफएमआर की स्थापना भारत-म्यांमार सीमा पर रहने वाले जातीय समुदायों, विशेषकर नागाओं की चिंताओं को दूर करने के लिए की गई थी।
- विभाजन और उपनिवेशीकरण की समाप्ति ने इन समुदायों को विभाजित कर दिया, जिससे असुरक्षा की भावना पैदा हुई क्योंकि वे सीमा के दोनों ओर अल्पसंख्यक बन गए।
- 1826 में बिना सहमति के सीमा निर्धारण ने एक ही जाति के लोगों को अलग कर दिया।
- म्यांमार संकट के दौरान 2022 में FMR को निलंबित कर दिया गया था, जिसके परिणामस्वरूप शरणार्थियों का आगमन हुआ।
- 1935 में म्यांमार की स्वतंत्रता और 1947 में उपमहाद्वीप के उपनिवेशीकरण ने सीमा पर नृजातीय समुदायों को और अधिक विभाजित कर दिया।

एओलस सैटेलाइट

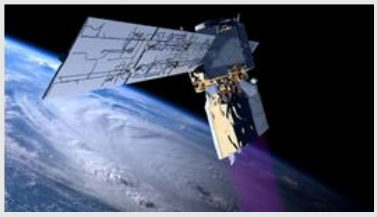

एओलस सैटेलाइट के बारे में:

- एओलस सैटेलाइट यूरोपीय अंतरिक्ष एजेंसी (ईएसए) द्वारा लॉन्च किया गया एक पवन-संवेदन उपग्रह है।
- उपग्रह का नाम ग्रीक पौराणिक कथाओं में हवा के संरक्षक देवता एओलस के नाम पर रखा गया है।
- एओलस उपग्रह पृथ्वी की सतह से 320 किमी की ऊंचाई पर स्थित है।
- यह कोपरनिकस परियोजना का हिस्सा है, जो पर्यावरणीय क्षति को ट्रैक करने और आपदा राहत कार्यों में सहायता के लिए यूरोपीय संघ (ईयू) और ईएसए संयुक्त पहल के रूप में प्रक्षेपित किया था।
- एओलस अलादीन नामक एक एकल उपकरण डॉपलर विंड लिडार से सुसज्जित है, जो अंतरिक्ष से वैश्विक पवन पैटर्न को सटीक रूप से मापता है।
- एओलस उपग्रह मौसम पूर्वानुमान की गुणवत्ता और सटीकता में सुधार करता है, वायुमंडलीय गतिशीलता की समझ को बढ़ाता है और जलवायु परिवर्तन अनुसंधान में योगदान देता है।

डॉपलर लिडार का कार्य:

- यह उपग्रह पृथ्वी की ओर पराबैंगनी स्पेक्ट्रम में लेजर प्रकाश के शक्तिशाली स्पंदनों को प्रसारित करता है।
- कण हवा में प्रकाश का एक अंश बिखेरता है, जिसका विश्लेषण हवा की दिशा,गति तथा तय की गई दूरी निर्धारित करने के लिए किया जाता है।

अखिल भारतीय शिक्षा समागम

अखिल भारतीय शिक्षा समागम, जिसे अखिल भारतीय शिक्षा कॉन्क्लेव के रूप में भी जाना जाता है, देश में शिक्षा के विभिन्न पहलुओं पर चर्चा और विचार-विमर्श करने के लिए भारत सरकार द्वारा आयोजित एक कार्यक्रम है।

विषय-वस्तु: कॉन्क्लेव में गुणवत्तापूर्ण शिक्षा तक पहुंच, न्यायसंगत और समावेशी शिक्षा, सामाजिक-आर्थिक रूप से वंचित समूहों के सामने आने वाली चुनौतियां, राष्ट्रीय संस्थान रैंकिंग फ्रेमवर्क और शिक्षा के अंतर्राष्ट्रीयकरण पर चर्चा हुई।

एनईपी 2020 का महत्व: यह आयोजन राष्ट्रीय शिक्षा नीति (एनईपी) 2020 की तीसरी वर्षगांठ के साथ मेल खाता है, जिसका उद्देश्य शिक्षा प्रणाली में परिवर्तनकारी बदलाव लाना है।

सहयोग के लिए मंच: शिक्षाविदों, नीति निर्माताओं, उद्योग प्रतिनिधियों, शिक्षकों और छात्रों ने एनईपी 2020 को लागू करने के लिए अंतर्दृष्टि और सर्वोत्तम प्रथाओं को साझा करने के लिए भाग लिया।

पीएम श्री योजना: पीएम श्री योजना के तहत चुने गए विद्यालयों में लाइब्रेरी, स्मार्ट क्लास, विज्ञान लैब, स्टाफ रूम, कंप्यूटर लैब, हैंड वाशिंग यूनिट, मिड डे मील शेड, किचन गार्डन, भंडार ग्रह, यूटिलिटी यार्ड, प्रशाधन और रीडिंग कॉर्नर की व्यवस्था उपलब्ध कराई जाएगी। जिससे बच्चों को शिक्षा प्रदान करने में कोई समस्या न आ सके।

इसी सन्दर्भ में आधुनिक और समग्र स्कूलों की स्थापना के लिए प्रधान मंत्री स्कूल फॉर राइजिंग इंडिया (पीएम एसएचआरआई योजना) के तहत धन की पहली किस्त जारी की गई है।

समाचार में स्थान
क्वानझाउ

हाल ही में, टाइफून डोक्सुरी ने क्वानझोउ सहित दक्षिणी चीन को हवा के तेज़ झोंकों और भारी बारिश के साथ प्रभावित किया।

स्थान: क्वानझोउ, जिसे चिनचेव के नाम से भी जाना जाता है, चीन के दक्षिणी फ़ुज़ियान में ताइवान जलडमरूमध्य के पास, जिन नदी के उत्तरी तट पर स्थित एक प्रीफेक्चर-स्तरीय बंदरगाह शहर है।

ऐतिहासिक महत्व: 11वीं से 14वीं शताब्दी के दौरान क्वानझोउ विदेशी व्यापारियों के लिए एक प्रमुख बंदरगाह था। इसे ज़ाइटन के नाम से जाना जाता था और मार्को पोलो और इब्नबतूता ने इसका दौरा किया था, जिन्होंने इसकी समृद्धि और महिमा की प्रशंसा की थी।

जिन नदी के बारे में:

- जिन नदी, जिसे जिन जियांग के नाम से भी जाना जाता है, दक्षिणी फ़ुज़ियान, चीन में है।
- यह दाइयुन पर्वत से निकलती है और ताइवान जलडमरूमध्य पर दक्षिण-पूर्व में क्वानझोउ खाड़ी में बहती है। नदी के आसपास के महत्वपूर्ण शहरों में चिनयान, चेंडाई, अन्हाई और डोंगशी शामिल हैं।

टाइफून डोक्सुरी:

- "डोक्सुरी" का उपयोग पश्चिमी प्रशांत महासागर में तीन उष्णकटिबंधीय चक्रवातों के नाम के लिए किया गया है।
- यह नाम दक्षिण कोरिया द्वारा प्रस्तुत किया गया था और इसका अर्थ "ईगल" है।
- 2005 के तूफान के मौसम के बाद इसने "नबी" नाम को बदल दिया।
- टाइफून डोक्सुरी की तीन घटनाएं 2012, 2017 और 2023 में हुई।
- डोक्सुरी 2012 ने चीन के गुआंग्डोंग को प्रभावित किया था।
- डोक्सुरी 2017 ने उत्तरी फिलीपींस और मध्य वियतनाम को प्रभावित किया था।
- डोक्सुरी 2023 वर्तमान में सक्रिय है, जो उत्तरी फिलीपींस में नुकसान पहुंचा रहा है और चीन और ताइवान की ओर बढ़ रहा है।